IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 29, Issue 4, Series 1 (April, 2024) 64-69
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

अलवर जिले में मानव संसाधन का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. चिरन्जी लाल रैगर

सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजगढ़, जिला अलवर, राजस्थान

परिचय :–

मानव संसाधन में किसी निश्चित ईकाई क्षेत्र में रहने वाली मानव जनसंख्या, उसकी शारीरिक एवं मानसिक क्षमता स्वास्थ्य, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक एवं राजनैतिक संगठन तथा वैज्ञानिक तकनीकी स्थिति सम्मिलित होती है।

किसी भी क्षेत्र या देश का विकास जिस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों से प्रभावित होता है, उससे भी ज्यादा मानव संसाधन से प्रभावित होता है क्योंकि मानव स्वयं संसाधन भी है एवं संसाधन बनाने वाला भी और मानव ही प्रकृति के निष्क्रिय संसाधनों को सक्रिय बनाकर उपयोग करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के एकीकरण के दौर में अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर को 18 मार्च 1948 को मिलाकर मत्स्य संघ नाम दिया गया। 22 मार्च 1949 को मत्स्य संघ का बृहत राजस्थान में विलीनीकरण के साथ यह राजस्थान का अभिन्न अंग बना तथा अलवर का उद्‌भव हुआ।

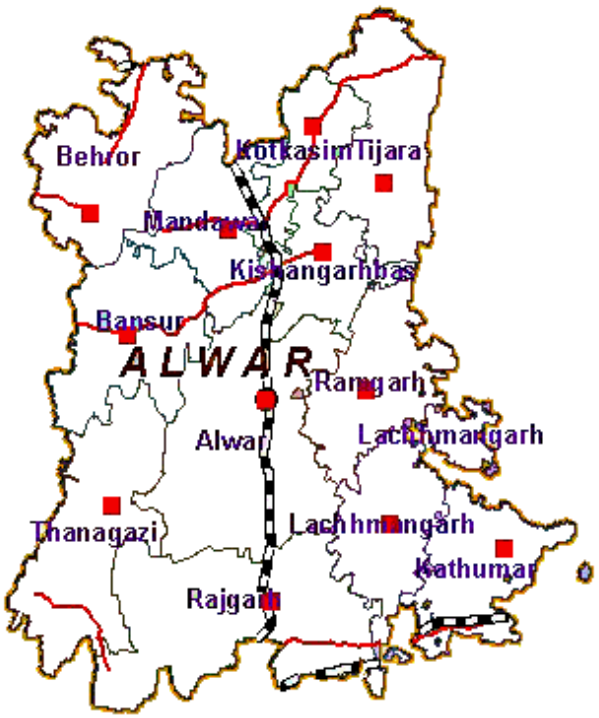

स्थिति एवं विस्तार

अलवर जिला उत्तरी पूर्वी राजस्थान में अपनी एक अलग भौतिक व सांस्कृतिक पहचान रखता है। अलवर जिला राजस्थान के उत्तरी पूर्वी भाग में 27203 से 28°14 उत्तरी अक्षांश तथा 7607 से 77 13° पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।

इसकी उ.पू सीमा हरियाणा राज्य के रेवाडी, गुडगाव जिले से लगती हैं। उत्तर दिशा में पंजाब की सीमा लगती है तथा पश्चिम में जयपुर जिला स्थित है। दक्षिण में दौसा जिला स्थित है। अलवर का क्षेत्रफल 8382 वर्ग कि.मी. है। उत्तर से दक्षिण में लम्बाई 137 कि.मी. एवं पूर्व से पश्चिम 110 कि.मी. है।

भौतिक विभाग

अलवर की भू–आकृतिक संरचना के अन्तर्गत उपजाऊ जलोढ मैदान, कम ऊँचाई के रेत के टीले एवं अरावली पर्वत श्रेणियाँ है। अलवर जिले की दो प्रमुख भौतिक विशेषताएँ है प्रथम यह प्राचीन बलित पर्वत (अरावली पहाड़ी क्षेत्र) जो मध्य भाग में है व द्वितीय गंगा–यमुना का जलोढ मैदान जो जिले के पूर्वी भाग में विस्तृत है। राजस्थान के दक्षिण से प्रारम्भ होने वाली अरावली पर्वत माला अलवर को विशेष रूप से प्रभावित करती है। यह श्रृंखला अलवर के दक्षिण से उत्तर पूर्व की ओर होती हुई हरियाणा दिल्ली तक जाती है, लेकिन यहाँ ये श्रृंखला छितराई हुई छोटी छोटी पहाड़ियों के रूप में है। यहां अरावली पर्वत श्रेणी की घाटियों के बीच में स्थित सपाट मैदानी भाग पर कृषि की जाती है ।

अलवर जिले का 55 प्रतिशत भू भाग निम्न भूमि में आता है जिसकी अधिकता बहरोड़, बानसूर, व तिजारा, कठूमर तहसीलों में है। जबकि 300 मी. से 450 मी तक ऊँचाई का 58 प्रतिशत भू भाग आता है, जिसमें लक्ष्मणगढ, मुण्डावर, अलवर, किशनगढ़बास शामिल है। उच्चावच के आधार पर जिले के मुख्यतया दो भू भाग को भागों में विभाजित किया गया है ।

जनसंख्या वितरण

जनसंख्या के वितरण और घनत्व के प्रारूप हमें किसी क्षेत्र की जनांकिकीय विशेषताओं को समझने में मदद करते हैं। जनसंख्या वितरण शब्द का अर्थ भूपृष्ठ पर लोग किस प्रकार वितरित है इस बात से लगाया जाता है। मोटे तौर पर विश्व की जनसंख्या का 90 प्रतिशत इसके 10 प्रतिशत भाग पर निवास करता है। जनसंख्या के वितरण का भौगोलिक अथवा स्थानिक प्रारूप और भी स्पष्ट होता है. जब जनसंख्या के आकडों को जिला व प्रादेशिक (तहसीलवार) अंकित कर विश्लेषित किया जाए। जनसंख्या से सम्बन्धित विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है यह देखा गया है कि क्षेत्र में वितरण समान रूप से नहीं पाया जाता है। यह स्थिति, घरातल, जलवायु मृदा यातायात आर्थिक उन्नति या सामाजिक कारकों के कारण प्रभावित होती है ।

जनसंख्या विवरण को बहुत से कारक प्रभावित करते हैं। जैसे– उस स्थान की उपजाऊ मृदा पानी समतल धरातल खनिज भण्डार, औद्योगिक इकाइयाँ,

उत्तम जलवायु धार्मिक स्थल आदि। जहाँ पर मानव के अनुकूल ये कारक विद्यमान होते हैं, वहाँ मानव जनसंख्या निवास करने लगती है।

भूतल पर जनसंख्या के वितरण में आदिकाल लेकर वर्तमान काल तक परिवर्तन होता रहा है। यद्यपि परिवर्तन की गति एवं दिशा देश काल के अनुसार मिन्न भिन्न रही है।

जिले के विभिन्न भागों में जनसंख्या का वितरण अत्यधिक विषम है। जहाँ एक और मानव निवास के लिए उपयुक्त स्थल खण्डों पर अत्यधिक जनसंख्या का जमाव हो गया है, वहीं दूसरी ओर बड़े बड़े भूखण्ड मनुष्य के लिए अनुपयुक्त होने के कारण पूर्णतया या आंशिक रूप से निर्जन है। जिले की स्थिति, औद्योगीकरण, यातायात मार्गों की सुगमता व सम्बन्धता के कारण जनसंख्या चनत्व व वितरण में भी वृद्धि देखी गई है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या पर स्थित औद्योगीकरण बहरोड़, नीमराणा, शाहजहापुर व भिवाड़ी में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

वर्ष 1971 से 2011 में अलवर जिले की जनसंख्या में वृद्धि हुई यह वृद्धि दर 161.73þ थी। वर्ष 1971 में जिले की जनसंख्या 140378 थी, जो बढ़कर 2011 में 36,74,179 हो गई। उपर्युक्त तालिका में तहसील वार जनसंख्या के वितरण को देखा जाये तो सर्वाधिक जनसंख्या अलवर तहसील में व न्यूनतम जनसंख्या • कोटकासिम तहसील की है विगत 40 वर्षों में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि तिजारा तहसील में 280þ प्रतिशत हुई थी, इसका प्रमुख कारण भिवाडी औद्योगिक क्षेत्र है। (मानचित्र सं. 3.5)

जनसंख्या वृद्धि :–

किसी क्षेत्र की निश्चित समयावधि में बढ़ने वाली जनसंख्या को जनसंख्या वृद्धि कहते हैं। जनसंख्या वृद्धि दर उस क्षेत्र की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रतिफल होता है। जनसंख्या वृद्धि को कुल जनसंख्या एवं प्रतिशत दोनों में व्यक्त किया जा सकता है। प्रतिशत मूल्य ज्ञात करने के लिए निरपेक्ष वृद्धि को विगत वर्ष की जनसंख्या से भाग देकर 100 से गुणा किया जाता है।

अलवर जिले में दशकीय जनसंख्या की संख्या में कमी हो रही है व 10000 से अधिक जनख्या वाले गाँवों में वृद्धि हो रही है। अलवर जिले की जनसंख्या की वृद्धि तालिका से स्पष्ट होता है कि 1971–2011 के मध्य +27.63 से घटकर 2011 में +22.78 प्रतिशत रही अर्थात 4.85þ की कमी हुई। जिसका प्रमुख कारण चिकित्सा सेवाओं में वृद्धि साक्षरता में वृद्धि जागरूक जीवन स्तर आदि है।

साक्षरता :–

साक्षरता, जनसंख्या की एक गुणात्मक विशेषता है, जो किसी क्षेत्र के सामाजिक व आर्थिक विकास का एक यथार्थ व विश्वसनीय सूचक है।

साक्षरता का शाब्दिक अर्थ व्यक्ति के साक्षर (अक्षरयुक्त) होने का गुण है। सामान्य अर्थ में 7 वर्ष या इससे अधिक आयु की जनसंख्या जो किसी भाषा को पढना, लिखना, जानती हो, साक्षर की श्रेणी में आती है।

देश के अन्य राज्यों की तुलना में राजस्थान में साक्षरता दर बहुत कम है। अलवर जिले में 1971 में 1973 प्रतिशत साक्षरता दर थी जो 2011 में बढ़कर 70.72 प्रतिशत हो गई अर्थात 50.99 प्रतिशत साक्षरता दर में वृद्धि हुई 1971 में सर्वाधिक साक्षरता दर बहरोड़ तहसील (26.59) प्रतिशत थी, जो 2011 तक रही 1991 में अलवर तहसील में साक्षरता दर सर्वाधिक थी, जबकि सबसे कम थानागाजी तहसील (28.03) है। वर्ष 2001 में अलवर जिले में साक्षरता दर 61.74 प्रतिशत थी, वही तहसील स्तर पर सर्वाधिक साक्षरता बहरोड़ तहसील (73.88 प्रतिशत) है, जबकि सबसे कम थानागाजी तहसील में (4807 प्रतिशत) थी। वर्ष 2011 में जिले की औसत साक्षरता दर 70.72 प्रतिशत है व सर्वाधिक साक्षरता दर कोटकासिम 76.82 प्रतिशत थी व न्यूनतम धानागाजी में 60:29 थी। (मानचित्र सं 3.6)

सर्वाधिक जनसंख्या का शिक्षित एवं साक्षर होना देश की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षित व्यक्ति, अशिक्षित व्यक्ति की तुलना में सभी जगह सफल होते हैं। रहन सहन के स्तर एवं साक्षरता की दर में भी गहरा संबंध है। साक्षरता की दर नगरीकरण से भी प्रभावित होती है। अलवर जिले के नगरीय क्षेत्रों में साक्षरता दर

ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक है, जो इस विषय को स्पष्ट करती है कि अलवर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में कृषि ही मुख्य व्यवसाय है। कृषक का शिक्षित होना बहुत जरूरी है। जिससे वह कृषि की आधुनिक तकनीक के विषय में जान सके एवं उन्नत खाद, बीज, आदि का प्रयोग करके फसल उत्पादन को बढ़ा सके। अशिक्षित किसान इन आधुनिक कृषि तकनीकों से अनभिज्ञ रहता है। अतः साक्षरता में वृद्धि होने से जागरूकता आती है एवं व्यक्ति अधिक कार्यकुशल होते हैं महिला पुरुष साक्षरता में भी औसत 20 प्रतिशत का अन्तर दिखाई दे रहा है। उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्ष 1971 से 2011 के माध्य दशक के साक्षरता दर में वृद्धि हो रही है। यह वृद्धि दर सर्वाधिक राजगढ़, तिजारा, लक्ष्मणगढ़ में अंकित की गई है।

लिंगानुपात :–

किसी भी क्षेत्र की सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनशीलता को ज्ञात करने में उस क्षेत्र का लिंगानुपात अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लिंगानुपात का तात्पर्य स्त्री–पुरुष अनुपात से है। यह अनुपात प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या को बताता है। लिंगानुपात स्त्रियों की संख्या में पुरुषों की संख्या का भाग देने पर प्राप्त संख्या को 1000 से गुणा करने पर प्राप्त होता है। लड़के के जन्म की अभिलाषा, पुरुष महिला के जन्म दर में अंतर से लैंगिक अनुपात में अन्तर का जन्म होता है। वर्ष 1971 में 887 , 1981 में 892 , 1991 में लिंगानुपात 880 था जो बढ़कर 2001 में 886 एवं 2011 में 895 हो गया जो लगातार लिंगानुपात में वृद्धि का सूचक है।

तहसील स्तर पर विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि 1971 में सर्वाधिक लिंगानुपात बहरोड़ में 937 जो 1981 में 940, 1991 में 933, 2001 में 917. सर्वाधिक बना रहा जबकि न्यूनतम लिंगानुपात अलवर तहसील 1971 में 863, 1981 में 855, 1991 में 868 न्यूनतम बनी तालिका से स्पष्ट है कि लिंगानुपात की परिवर्तन दर धीरे–धीरे कम होती जा रही है, जिसका प्रमुख कारण लड़की की शादी में दहेज देना, लड़के की लालसा अन्य सामाजिक मान्यताएँ प्रमुख है।

जनसंख्या घनत्व :–

यह भूमि एवं जनसंख्या के मध्य अनुपात है। यह जनसंख्या संक्रन्द्रण के स्तर को प्रदर्शित करता है। भूमि संसाधन सीमित है, जबकि जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। ऐसी परिस्थितियों में भूमि पर जनसंख्या घनत्व को ज्ञात करना आवश्यक है। जिससे भविष्य के विकास की सम्भावना का पता लगाया जा सके। जनसंख्या घनत्व से तात्पर्य कुल भौगोलिक क्षेत्र पर प्रतिवर्ग किलोमीटर औसत जनसंख्या से है।

व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. अलवर में वर्ष 1971 में जनसंख्या घनत्व 166 1981 में 211 व 1991 जनसंख्या घनत्व 274 था जो 2001 में 352 एवं 2011 में 438 हो गया। तहसील स्तर पर विवेचन करने पर स्पष्ट है कि 1971 से 1991 तक सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व बहरोड तहसील का था 1971 से 1991 तक न्यूनतम थानागाजी तहसील का था। 2001 व 2011 में सर्वाधिक जनघनत्व 615 व 762

व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि धीरे–धीरे जनसंख्या घनत्व बढ़ता जा रहा है। जिससे भूमि उपयोग में परिवर्तन हो रहा है विशेषकर कृषि भूमि पर दबाव बढ़ने लगा। अंत इस समस्या के समाधान के लिए क्षेत्र में वैकल्पिक रोजगार लगाना चाहिए एवं परिवार नियोजन कार्यक्रम उच्च स्तर पर चलाये जाने चाहिए। उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि अलवर जिले में तहसील अनुसार तीन जनसंख्या घनत्व क्षेत्र है।

1. अधिक जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र तिजारा, अलवर, बहरोड, रामगढ़, किशनगदबास, यहाँ अधिक जनसंख्या घनत्व अधिक होने का कारण औद्योगिक व यातायात सुविधाओं का होना प्रमुख है।

2 मध्यम जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र मुण्डावर, कोटकासिम, कठुमर व नीमराणा । राष्ट्रीय राजमार्ग के विकास के साथ–साथ विश्व के प्रमुख औद्योगिक संस्थानों में उद्योगों की स्थापना के कारण प्रवासी जनसंख्या में वृद्धि हुई।

3. निम्न जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र राजगढ, लक्ष्मणगढ़ थानागाजी यहाँ जनसंख्या का विवरण अभी भी अधिक है। मूलभूत सुविधाओं का विकास हो रहा है।

विगत 40 वर्षों में जनसंख्या घनत्व में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। वर्ष 1971 में अलवर जिले में 166 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर निवास करते थे जो 2011 में बढ़ की 438 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गये अर्थात 272 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या घनत्व में बढ़ोतरी हुई सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व अलवर तहसील में 578 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। जनसंख्या घनत्व की वृद्धि क्षेत्र के विकास को इंगित करती है।

ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या

सामान्यतः औद्योगिक विकास नगरीय जनसंख्या का सूचक है जबकि कृषि प्रधान क्षेत्रों में ग्रामीण जनसंख्या अनुपात अधिक पाया जाता है। सामाजिक और आर्थिक विशेषताओं का एक महत्वपूर्ण सूचक है।

विश्व के विभिन्न देशों में ग्रामीण और नगरीय जनसंख्या को मापने के अलग–अलग मापदण्ड है। सामान्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश लोग प्राथमिक क्रियाओं जैसे कृषि वानिकी, मत्स्य तथा खनन आदि व्यवसायिक गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। जबकि नगरीय क्षेत्रों में अधिकांश लोग गैर प्राथमिक (द्वितीयक व (तृतीयक) क्रियाओं जैसे विनिर्माण, वाणिज्य परिवहन सेवाएं सवार तथा अन्य अवर्गीकृत सेवाओं के अलावा अनुसंधान व वैचारिक विकास से जुड़े कार्यों में संलग्न रहते हैं। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में आयु, लिंग, संगठन, व्यावसायिक संरचना जनसंख्या का घनत्व विकास का स्तर व रहन–सहन की दशाऐं अलग–अलग होती है 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की लगभग 35 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है। क्षेत्रीय आधार पर अलवर जिले के नगरीय क्षेत्र जैसे अलवर शहर, बहरोड, भिवाड़ी में नगरीय व्यवस्था देखने को मिलती है। वहीं अधिकांशतः नगरों के समीपस्थ क्षेत्रों में ग्रामीण परिवेश देखने को मिलता है।

तालिका से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण जनसंख्या अलवर जिले में 1971 में 1264,280 व 1981 में 15,74,972 थी, जो 1991 में 19,76,293 एवं 2001 में 13.49,768 एवं 2011 में 30,19,728 हो गयी जो कि घटती दर से बढ़ रही है। जबकि नगरीय जनसंख्या वर्ष 1971 में 1.26,882 1981 में 1,96,201 थी. जो बढ़कर 1991 में 19,76,239 व 2001 में 4,34,939 एवं 2011 में 6,54451 गयी। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि लोगों का प्रवास ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर हो रहा है। जिसका प्रमुख कारण रोजगार प्राप्त करना, भौतिक सुविधाएँ, कृषि मानसून का जुआ, उच्च अध्ययन आदि सम्मिलित है नगरीकरण औद्योगिकरण से धनात्मक रूप से संबंधित है यह दोनों चर एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। औद्योगिकरण के कारण नगरों का क्षैतिज व उर्ध्वाधर विस्तार होता है। तहसील स्तर पर 1971 से 1991 तक सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या लक्ष्मणगढ में थी एवं सबसे कम ग्रामीण जनसंख्या थानागाजी तहसील में थी। वहीं 1971 से लेकर 2011 तक सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या अलवर तहसील सबसे कम मुण्डावर, बानसुर, रामगढ़ थानागाजी की थी।

कार्यशील एवं अकार्यशील जनसंख्या :–

जनांकिकीय स्वरूप में कार्यात्मकता एवं संरचना महत्वपूर्ण पहलू है। कार्यात्मक संरचना का तात्पर्य उस जनसंख्या से है, जो किसी वस्तु या सेवा के उत्पाद में लगी होती है। कार्यात्मक जनसंख्या पर ही किसी देश का विकास निर्भर करता है। आर्थिक गतिविधियों के आधार पर जिले की जनसंख्या को मुख्यतौर पर दो श्रेणियों में बांटा गया है। कार्यात्मक जनसंख्या में 15 वर्ष से 4 वर्ष की जनसंख्या को सम्मिलित करते हैं। जबकि आयुवर्ग 0–14 एवं 65 से अधिक आयु वाले वर्ग अकार्यशील जनसंख्या है। 1971 से लेकर 2011 तक कार्यशील व अकार्यशील जनसंख्या में परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

तहसील स्तर पर कार्यशील एवं अकार्यशील जनसंख्या

तहसील स्तर पर 1971 व 2011 के मध्य परिवर्तन दिखाई दे रहा है। 1971 में सर्वाधिक व न्यूनतम कार्यशील जनसंख्या क्रमशः धानागाजी (33.17þ) एवं न्यूनतम बहरोड़ में 2281 प्रतिशत, वहीं 2011 में सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या बानसूर में 5224 प्रतिशत व न्यूनतम अलवर तहसील 41.25 प्रतिशत थी, जबकि अकार्यशील जनसंख्या में 1971 व 2011 में क्रमशः सर्वाधिक बहरोड 77.19 प्रतिशत व न्यूनतम थानागाजी 66.83 प्रतिशत सर्वाधिक अलवर 58.75 प्रतिशत व न्यूनतम कोटकासिम 45.52 प्रतिशत थी।

सामाजिक संरचना में पिछड़े वर्ग का अध्ययन हेतु अनुसूचित जाति एवं जनजाति का वितरण किसी भी क्षेत्र विशेष के मानवीय संसाधान के अध्ययन के संदर्भ में समाज के सभी वर्गों की जनांकिकी संरचना का अध्ययन किया जाता है। विकास हर क्षेत्र में पहुंच सके। इस हेतु आर्थिक सामाजिक पिछड़े वर्ग का अध्ययन किया जाता है क्योंकि आर्थिक सामाजिक विषमता विकास में बाधक होती है।

अलवर जिले में 1971 अनुसूचित जाति 17.10 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़ कर 17.77 प्रतिशत हो गयी वही अनुसूचित जनजाति 1971 में 11.68 प्रतिशत थी जो घटकर 7.87 प्रतिशत हो गयी इसका 1991 में अनुसूचित जाति जनसंख्या 17.78 प्रतिशत थी जो 2001 में 18.01 प्रतिशत तथा 2011 में घटकर 17.77. प्रतिशत रह गई। अनुसूचित जनजाति जनसंख्या 1991 में 8.06 प्रतिशत थी जो 2001 में 8.02 प्रतिशत तथा 2011 में घटकर 787 प्रतिशत रह गई। तहसील स्तर पर विवेचन करने पर स्पष्ट होता है कि 1971 में अनुसूचित जाति की सर्वाधिक जनसंख्या लक्ष्मणगढ़ तहसील में 2062 प्रतिशत थी व 2011 में कठूमर तहसील में 24.30 सर्वाधिक अनुसूचित जाति की जनसंख्या थी वहीं अनुसूचित जाति की जनसंख्या 1971 में राजगढ़ तहसील में 1784 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़कर 30. 82 प्रतिशत हो गयी।

1991 में एस.सी. जनसंख्या लक्ष्मणगढ तहसील (2093 प्रतिशत) थी, जबकि न्यूनतम थानागाजी (14.15 प्रतिशत) थी। वहीं एस.टी. जनसंख्या राजगढ़ तहसील (30.14 प्रतिशत), न्यूनतम तिजारा में (0.14 प्रतिशत) थी। वर्ष 2011 में सर्वाधिक एस.सी. जनसंख्या कमर तहसील (24.30 प्रतिशत) एवं न्यूनतम तिजारा में (12.55 प्रतिशत) थी। वहीं एस.टी. जनसंख्या सर्वाधिक राजगढ़ तहसील (30.82) एवं न्यूनतम विजारा में (0.28 प्रतिशत) थी।

व्यवसायिक संरचना :–

जीविकोपार्जन तथा जीवनयापन के लिए की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं को व्यवसाय कहते हैं। जनसंख्या अध्ययन में व्यावसायिक संरचना का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इससे उस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का पता चलता है। व्यवसायिक संरचना के अन्तर्गत जनसंख्या को चार प्रमुख व्यवसायों में बांटा गया हैं

।. काश्तकार –

काश्तकार वह व्यक्ति होता है जो स्वयं की भूमि पर या सरकार या दूसरे व्यक्ति या संस्था की भूमि पर स्वयं या पारिवारिक सदस्य के साथ काम करता है, काश्तकार कहलाता है। वर्ष 1991 में 77.07þ एवं 2001 में 68.27þ तथा 2011 में 63.06þ काश्तकार थे। इससे पता चलता है कि धीरे–धीरे काश्तकारों की संख्या में कमी आ रही है।

ठ. खेतीहर मजदूर

वह व्यक्ति जो नगद, बटाई के रूप में मजदूरी लेकर खेत में कार्य करता है, खेतीहर मजदूर कहलाता है। वर्ष 1991 में जिले में 8.97þ 2001 में 9.85 प्रतिशत था। 2011 में 997 प्रतिशत खेतीहर मजदूर थे। इससे स्पष्ट है कि खेतीहर मजदूरों की संख्या बढ़ रही है।

ब पारिवारिक उद्योग

इस श्रेणी में कुटीर उद्योग एवं लघु उद्योग आते हैं जो घर के मुखिया द्वारा परिवार के सहयोग से चलाया जाता है। जैसे, पापड, गलीचा, जूतिया, आचार, मुरब्बे बनाना आदि। इससे स्पष्ट है कि पारिवारिक उद्योगों में लगी जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। वर्ष 1991 में 873 प्रतिशत 2001 में 1.97 प्रतिशत एवं 2011 में 1.67 प्रतिशत जनसंख्या इसमें कार्यरत थी।

क. अन्य कार्य करने वाले

इस श्रेणी में व्यापार, वाणिज्य सरकारी कामिक शामिल है। वर्ष 1991 में जिले में 5.27 प्रतिशत वर्ष 2001 में 19.89 प्रतिशत था तथा 2011 में 25.28 प्रतिशत जनसंख्या इसमें लगी हुई थी। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि को छोड़कर अन्य कार्य करने की प्रवृति बढ़ती जा रही है।

निष्कर्ष :–

1971 से 2011 के आर्थिक व व्यवसायिक जनसंख्या के अध्ययन में सर्वाधिक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। सर्वाधिक परिवर्तन तिजारा क्षेत्र में हुआ। यहाँ काश्तकार जनसंख्या में 33.36 प्रतिशत की गिरावट आंकी गई। यह जनसंख्या अन्य कार्यों में परिवर्तित हुई इसका प्रमुख कारण भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना होने से काशा भूमि उपयोग में परिवर्तन हुआ काश्त क्षेत्र औद्योगिक संस्थानों, व्यवसायिक संस्थानों व अधिवासों में परिवर्तित हो रहा है।

सन्दर्भ सूची :–

1. जिला सांख्यकीय रूपरेखा , अलवर ।

2. जिला रोजगार कार्यालय , अलवर ।

3. पर्यटन विभाग , जिला अलवर ।

4. अलवर का मास्टर प्लान 2013

5. जिला कलेक्टर कार्यालय , अलवर ।

6. सूचना जनसंपर्क विभाग , अलवर ।